



शब्द—ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

E ISSN 2320 – 0871

17 नवम्बर 2016

पीअर रीव्यूड रेफीड रिसर्च जर्नल

सकारात्मक विचार और शिक्षा का सहसंबंध

डॉ.अमिता जैन

सहायक आचार्या

शिक्षा विभाग

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हमें सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। जैसे- हमारा कार्य अच्छा हो, हम अपने कार्यों में सदा सफल हों, हम दूसरों में अच्छाइयां देखें आदि इसके लिए आवश्यक है कि हमारे भाव भी सरल हों। इससे हम जो भी कार्य करते हैं वह सरल रूप में होगा और व्यवहार भी सरल होगा। अवरोध कम आएंगे। सकारात्मक भाव व्यक्ति में साहस जगाते हैं। विकट परिस्थितियों में संघर्ष करने की क्षमता भी देते हैं। इससे व्यक्ति में सदा स्फूर्ति बनी रहती है। प्रस्तुत शोध पत्र में जीवन में सकारात्मक विचार के महत्व को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

जीवन में सकारात्मक विचार का महत्वपूर्ण स्थान है। अनेक महापुरुषों ने बड़ी से बड़ी कठिनाईयों को इसी आधार से हल किया है। यद्यपि सकारात्मक और नकारात्मक भाव और विचार जीवनभर साथ में रहते हैं, लेकिन इसकी अधिकता या कमी से मनुष्य का विकास अथवा पतन टिका रहता है। नकारात्मक भाव व्यक्ति की ऊर्जा को क्षीण करते हैं। उसका ओज ही समाप्त सा हो जाता है और साहस तो उसके कोष से विदा ही हो जाता है। आज तो वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि सकारात्मक व्यक्तित्व सामने वाले नकारात्मक व्यक्तित्व का बाली की तरह, आधा बल खींच लेता है। नकारात्मक व्यक्ति तो उस स्थिति में स्वयं को हारा हुआ ही मानता है। अच्छी से अच्छी अनुकूल परिस्थितियों में भी पहले उसकी दृष्टि अपने नकारात्मक पहलू पर ही पड़ती है

और वह सकारात्मक पहलू पर ध्यान जाने से पूर्व ही निस्तेज हो जाता है।

सकारात्मक भाव उसकी आत्मा के मूल अंक से जोड़ने का कार्य करते हैं। वह अपनी शक्तियों को पहचानने एवं उनके उपयोग के लिए प्रेरित रहता है। उसकी आत्मा में छिपे सभी सृजनात्मक पहलू प्रकट में आ जाते हैं। हर विषय को वह आगे बढ़ने के लिए ही देखता है। हर अवरोध, हर रुकावट को चुनौती के रूप में स्वीकार करता है, तभी उसके जीवन में आनन्द बरसता है। चुनौतियां पार कर अपने लक्ष्य तक पहुंचने का आनन्द केवल सकारात्मक भाव के साथ ही मिल सकता है।

नकारात्मक भाव व्यक्ति को पहले ही अधमरा कर देते हैं। सुख मिलना इतना कठिन नहीं है, जितना कि सुख को भोग लेना। सुख को भोगने के लिए अनुकूल स्वभाव चाहिए। अनेक लोग मिलेंगे जिनके पास काफी धन-दौलत है, किन्तु

